सभी के हृदय कुंज में दादी का प्रकाश पुंज

कलियुग नहीं करयुग है यह, इस कलियुग में कलंगीधर परमात्मा की एक ऐसी रचना जिसने पैदा होते ही अपने चमत्कारिक व्यक्तित्व द्वारा इस धरा पर आध्यात्मिकता की धूम मचा दी। इस आत्मा ने पिछले 45 वर्षों में वो कर दिखाया जो एक आम इंसान कई दशकों में करना तो क्या सोच भी नहीं सकता। पर मैं ये सोचता हूँ कि मैं यह तारीफ क्यों कर रहा हूँ? शायद आप भी ऐसा ही कुछ सोच रहे होंगे, ज्यादा संकल्प न चलें इसलिए हम आपके सामने उस महान आत्मा की आत्मिक कहानी कुछ अति स्नेही और भगवान के यज्ञ-रक्षकों की जुबानी, आपके सम्मुख जीवंत रूप से रख रहे हैं। आप इसे अवश्य पढ़िये और पढ़ने के बाद आप सोचने पर मजबूर हो जायेंगे कि काश हम भी इस महान व्यक्तित्व के आंचल के छांव में पल गये होते...

दादी प्रकाशमणि के 7 वें स्मृति दिवस पर श्रद्धांजली

प्यार व पालने का सिलसिला दादी से कुछ ऐसा मिला

ब्र.कु.मोहिनी

प्यारे बाबा की आज्ञानुसार जापान में होने वाले सम्मेलन में भाग लेने जाते समय चन्द घण्टों के लिए प्यारी दादी जी को लखनऊ आना हुआ। दादीजी से पहली मुलाकात में उन्होने मुझे कहा कि आप बहुत भाग्यवान हो जो आपको इतनी छोटी आयु (12 वर्ष) में भगवान ने पसंद किया। दादी जी जापान चली गईं परन्तु मेरे दिल पर अमिट छाप छोड़ गईं। चंद घण्टों की मुलाकात में उनके वात्सल्य, अपनत्व भरी आवाज़, झील-सी गहरी आँखें जिनमें ममता का सागर लहरा रहा था - इन सबने मेरे दिल में सदा के लिए स्थान बना लिया।

एक वर्ष के बाद जब दादी जी जापान से लौटने वाली थीं तो मैं मधुबन में ही थी। मैंने देखा कि प्यारे बाबा बहुत उमंग और प्यार से दादी जी के स्वागत की तैयारियाँ कर रहे थे। हर ब्रह्मा-वत्स के अंदर दादी जी के प्रति अथाह प्यार देखकर मैं बहुत खुश हो रही थी। उनके आगमन की घड़ियाँ नज़दीक आती जा रही थीं। बहुत ही हर्षितमुख, बेपरवाह बादशाह, सेवा की सफलता से सम्पन्न, प्यारे बाबा से मधुर मिलन मनाती हुई दादी ने हम सबको भी रूहानी नज़र से निहाल किया। मुझे देखकर बोला, आप भी आई हो? मुझे बहुत खुशी हुई कि प्यारी दादी ने मुझे पहचान लिया। तब से उनसे मिलने और पालना लेने का सिलसिला जारी रहा। फिर प्यारे बाबा ने मुझे दादी जी के साथ देहली की अलौकिक सेवार्थ भेजा। दादी जी ने मुझे अपने साथ रखकर छोटी से लेकर बड़ी सेवा करनी सिखाई। उनके संग के रंग में मैं ऑलराउण्डर और हर सेवा में दक्ष बनती गई। मैंने देखा, दादी जी का मम्मा-बाबा के साथ निश्छल प्यार, अटूट भावना, सेवा में समर्पण, हाँ जी का पक्का पाठ और एक बाप दूसरा न कोई की दृढ़ धारणा से सदा एकव्रता स्थिति रही। सत्यता और दिव्यता की प्रतिमूर्ति दादी सदा बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान रह, निश्चिन्त भाव से परोपकार में तत्पर रहतीं और अन्य आत्माओं को सेवा में साथी बनाकर, एकता के सूत्र में बांधकर आगे बढ़ाती रहीं।

संवारने का प्रबन्धन सीखा दादी जैसी प्रबन्धक से

ब्र.कु.मुन्नी

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण कोई भी योग्यता पैदा करने में मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था। ओम् शान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबन्धन दादीजी ने मुझे सिखाया। दादी जी खरीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी। दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, कोई गलती कर देती थी तो बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा का सागर थीं, हर गलती को भुला कर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादीजी स्वयं सदा सन्तुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, 'सभी यज्ञ-वत्स सदा खुश और सन्तुष्ट रहने चाहिए'। किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना थी।

सवाली के सवाल का चुटकी में हल

दीदी निर्मला

दादी जी हर पहलू को सकारात्मक दृष्टि से देखती थीं और सभी नये विचारों को खुलकर अपनाती थी। किसी भी नये विचार को बड़े स्तर पर अपनाने से पहले छोटे स्तर पर उसको जांचती थी कि ये कार्य उचित परिणाम देगा या नहीं। इस प्रकार सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों को प्रेरणा मिलती थी। वे केवल एक अच्छी प्रशासिका ही नहीं थी बल्कि उनके भाषणों में चमत्कारिक शक्ति थी। देश-विदेश में उनके भ्रमण ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी तथा वी.आई.पीज़ को संस्था से जुड़ने में बहुत सहायता की। दादी जी को न केवल ब्राह्मण परिवार बल्कि विश्व की सर्व आत्माओं से बहुत प्यार था। वे सहज भाव से पाण्डव भवन के बरामदे में बैठ जाती थी और सभी के छोटे-से-छोटे सवालों का भी जवाब देती थीं। अनेकों ने अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए दादी जी के निर्देशन का लाभ उठाया। दादी जी में लव एवं लॉ का सुंदर बैलेन्स था। दादीजी ने इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवाओं को परमात्म-शक्ति की मदद से सारे विश्व में फैलाया। दादीजी में निर्णय शक्ति बहुत प्रखर थी वे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में देर नहीं करती थीं, तुरंत उसे मूर्त रूप देती थीं।

अमूल्य समय के मूल्य को समझती थीं

ब्र.कु.निर्वैर

इस यज्ञ के संस्थापक ब्रह्माबाबा द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रशासक के रूप में दादी प्रकाशमणि को ही चुना गया तथा उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ का प्रमुख बना दिया गया। दादी जी की प्रशासनिक कला यज्ञ की पहली प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा के समान ही प्रभावशाली था। ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त होने से पहले दादी जी के हाथों में हाथ देकर, दृष्टि देते हुए अपनी सभी सूक्ष्म शक्तियाँ दिव्य रीति से सौंप दीं। दादी जी एक कुशल प्रशासक, महान आध्यात्मिक नेता, प्रेम से सबका देखभाल करने वाली माँ और बहन, एक ऐसी स्ट्रीक्ट टीचर जो ज्ञान की गहराइयों में नियमित, सच्चा योगी, एक बहुत ही प्यारी आध्यात्मिक दोस्त थीं। संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों को समन्वय करने पर बल देती थीं। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बांध देती थीं। पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादी जी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती थीं कि समय व शक्ति व्यर्थ न जाये क्योंकि इन शक्तियों के द्वारा ही संगठन सुचारू रूप से चलता है। दादीजी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास तथा उसके संगठित प्रयोग से असंभव को भी संभव करने पर बल देती थीं। वे समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं।

ऐसी स्नेह भरी पालना थी दादी की

ब्र.कु.रमेश

सन् 1952 में जब मेरा इस विश्व विद्यालय के साथ परिचय हुआ तब से इसके सभी अनन्य रत्नों का परिचय तो था ही और कईयों के परोक्ष व अपरोक्ष रूप से सम्पर्क में भी आया था। जब दादीजी और दादी रतनमोहिनी जापान गये तो मैंने दादीजी को पत्र लिखा कि श्रीमद्भगवतगीता पाठशाला के मुखिया पांडुरंग शास्त्री तथा उनके एक साथी जिनके साथ मेरे पहले बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध थे, वे भी जापान के विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने गये थे। उन्हें भोजन के लिए रोज अपने पास बुलाना और उनकी ईश्वरीय सेवा करना। मैंने शास्त्री जी को भी मुम्बई में कहा था कि वहां आपको खाने की दिक्कत न हो इसलिए मैंने ब्रह्माकुमारी बहनों को लिखा है, आप भी उनसे सम्पर्क करना। जापान की दस दिनों की कान्फ्रेन्स में दादीजी और दादी रतनमोहिनी ने उन दोनों को अपने हाथ से पकाया हुआ पवित्र भोजन खिलाया और साथ ही यज्ञ का इतिहास भी बहुत विस्तार से सुनाया। दादीजी की इस पालना वे प्रभावित हुए और उनके लिए दुआएं भी दीं। परिणाम स्वरूप जब शास्त्री जी मुम्बई आये तब उन्होने मुझे कहा कि रमेश भाई, ब्रह्माकुमारी संस्था का इतिहास सुनकर मैंने जाना कि पुरूष प्रधान समाज ने बहनों की आध्यात्मिक उन्नति में कितनी रूकावट डाली तो मेरी आँखों में पानी भर आया। बाद में हमेशा ही शास्त्री जी का विश्व विद्यालय के साथ स्नेह भरा सम्बन्ध रहा। फिर वे प्यारे ब्रह्मा बाबा तथा प्यारी मातेश्वरी जी से मिलने भी आये। इस प्रकार दादीजी द्वारा अपरोक्ष रूप से उनकी सेवा हुई।

सत्यता की मूरत दादी

ब्र.कु.ओमप्रकाश

लोगों ने सत्यता के गुण की महिमा एवं महत्व बहुत बताया है और ऐसे व्यक्ति करोड़ों में कोई ही होंगे, जिन्होने दुर्गम एवं विपरीत परिस्थितियों में भी झूठ नहीं बोला हो परन्तु दादी जी एक ऐसी महान आत्मा थीं, जिन्होने जीवन में एक बार भी झूठ नहीं बोला है। एक बार शासकीय अधिकारियों का एक ग्रुप दादीजी से मिल रहा था। एक अधिकारी ने पूछा कि दादी जी, एक विभाग का हैड होने के नाते मुझे कामकाज एवं जिम्मेवारी के कारण बहुत तनाव रहता है, परन्तु आप तो सारे विश्व में व्यापक अनेक सेवाकेन्द्रों की हैड हैं तो क्या आपको तनाव नहीं रहता? दादीजी ने सहजता से उत्तर दिया कि मैं स्वयं को हैड मानती ही नहीं इसलिए मुझे हेडेक नहीं होता। हमारा संस्था का हैड परमपिता परमात्मा शिव है, मैं तो एक निमित्त एवं सेवाधारी हूँ।

जन-जन को मिले संदेश, यही था दादी का आदेश

ब्र.कु.करूणा

हम सभी दिल व जान से दादी जी को याद करते हैं। रात दिन उनकी समीपता की, सहयोग की, सिर पर हाथ की अनुभूति करते हैं क्योंकि हमारी दादी सम्पूर्ण फरिश्ता बनकर ही गए हैं, जिसे हम कर्मातीत स्थिति भी कहते हैं। आज भी दादी जी गुल्ज़ार दादी के तन द्वारा आकर के अपना स्नेह, अपना प्यार समय प्रति समय दे रहे हैं। जो बाबा के बच्चे दादी जी के साथ रात-दिन सेवा में साथ रहे, सहयोगी रहे, उनसे पूरी तरह से अनुभूति किये, वे दादी जी को कभी भी भूल नहीं सकते। मैं हर रोज़ अमृतवेला एवं नुमाशाम पर भी बाबा व मम्मा के साथ दादी जी का फरिश्ता स्वरूप से अनुभव करता हूँ। दादी जी जो संकल्प करती थीं वो कार्य संपन्न हो जाता था। हम सभी ने देखा कि दादीजी ने संकल्प किया कि लाखों की सभा होनी चाहिए और वो सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। विश्व के परिवर्तन के महान कार्य में दादी जी आज भी हमारे साथ हैं। दादी जी का संकल्प था विज्ञानियों को आगे बढ़ाना, स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना, उसमें भी दादी जी हम सबके साथ हैं। दादी हम सबके साथ हैं, साथ रहेंगी और साथ ही हम सब वापिस अपने सतयुगी दुनिया में जाएंगे। हर गांव एवं शहर के जन-जन तक परमात्म-संदेश पहुँचे इसलिए दादीजी ने ईश्वरीय प्रेरणा से ओम शान्ति मीडिया पत्रिका का प्रकाशन आरंभ कराया।

जादुई चिराग जैसा अनुपम व्यक्तित्व

ब्र.कु.दिव्यप्रभा

दादीजी के शक्ति स्वरूप का प्रत्यक्ष प्रमाण बोरीवली स्थित 'प्रभु-उपवन' राजयोग रिट्रीट सेंटर है। बोरीवली में सेवाओं की वृद्धि को देखते हुए, हम सभी के साथ-साथ दादीजी का भी यह शुभ संकल्प रहा कि इस स्थान पर ब्राह्मण परिवार की सुव्यवस्थित पालना हेतु एक बड़ा सेवा स्थान होना चाहिए। लेकिन, मुम्बई जैसे शहर में एक भवन का निर्माण करना, यह कार्य किसी चुनौती से कम नहीं था। यह एक ऐसा शुभ कार्य था, जिसकी सम्पन्नता के पूर्व कई परीक्षाओं को पार करना पड़ा। ज्ञान-योग की शक्ति से कई विघ्न तो पार हो गए, पर कुछेक ऐसी अड़चनें भी थीं, जिन्हें बड़ों के सहयोग के बिना पार करना असम्भव प्रतीत होता था। ऐसी विकट परिस्थिति में दादीजी की छत्रछाया ने मुझे शीतलता प्रदान की। एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मुख्य प्रशासिका होते हुए भी मैंने दादीजी के चरित्र में सदैव निर्मानता देखी। पर यह वो क्षण थे जब मैंने शक्ति स्वरूपा दादी जी को अपनी अथॉरिटी यूज करते देखा। मुझमें असीम विश्वास रखते हुए दादी जी ने मुझे अपने दृढ़ निर्णय का सहारा दिया और उस निर्णयात्मक मोड़ पर दादी जी के समर्थ निर्णय ने एक जादुई चिराग की भांति सभी बंद दरवाजे खोल दिये।

दादी में कर्तापन का भान नहीं था

ब्र.कु.संतोष

दादीजी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनमें मैं-पन का सम्पूर्ण अभाव। हमने कभी भी उन्हें मैं शब्द उपयोग करते नहीं देखा। दादीजी के मुख्य प्रशासिका बनने से पहले भी मुम्बई में मुझे दादीजी के साथ रहने का अवसर मिला। उन्हें अपना विचार प्रकट करना भी होता था तो वे कहती थीं कि दादी का यह विचार है, दादी ऐसा करना चाहती है। हम सभी सामान्य रूप से यह कहते हैं कि मेरा यह विचार, मैं यह करना चाहता हूँ। परन्तु दादीजी ने कभी मैं या मेरा शब्द उपयोग नहीं किया। खुद का पार्ट भी वे साक्षी होकर बजाती थी। उन्हें भले बैठकर अधिक समय योग करने का समय नहीं मिलता था लेकिन उनका हर कर्म ही योगयुक्त था। कर्म में ही बाबा की याद समाई होने के कारण उनके हर कर्म महान व श्रेष्ठ थे। उनमें कर्तापन का भान बिल्कुल नहीं था। वे सदा स्वयं को निमित्त व बाबा को करनकरावनहार समझते थे। इस धारणा के कारण वे हर कर्म करते सहज न्यारे रहते थे। वे सदा सभी को साथ लेकर चलती थी इसलिए सभी उनसे प्रसन्न व संतुष्ट रहते थे। वे हम सभी बहनों को अपनी सखी की तरह प्यार व सम्मान देती थीं। दादी सदा निष्पक्ष रहती थीं। वे कभी किसी पक्ष के प्रभाव में आकर निर्णय नहीं लेती थीं। बाबा की याद में रहने के कारण उनकी निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। उनके अथॉरिटी भरे बोल ऐसे होते थे जो हर आत्मा दिल से स्वीकार करती थी कि दादीजी ने कहा माना बाबा ने कहा और मुझे करना ही है। वे क्षमाशील थीं। दादीजी में लव एवं लॉ का सुंदर संतुलन था। दादीजी ने कभी स्वयं को प्रमुख न मानकर निमित्त समझ सेवा की जिम्मेवारी सम्भाली। दादी का मन बहुत ही निर्मल था, किसी का अवगुण उनके चित्त पर ठहरता नहीं था। दादीजी ने अपनी ज्ञान व योग की ऊँची धारणाओं से सभी यज्ञवासियों को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा।

अक्षम्य को भी दादी क्षमा करती थीं

ब्र.कु.आशा

दादीजी का दूसरों की गलतियों को क्षमा करने का स्वभाव दिल को छू जाता था। दादीजी कहती थीं कि बाबा, कौड़ी से हीरा, पतित से पावन व तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आये हैं। हर आत्मा जो ईश्वरीय ज्ञान-योग का अभ्यास करती हैं, पुरूषार्थी हैं, सम्पूर्ण नहीं हैं। उन्होने सदा सभी पर रहम किया और दिल से गलतियों को क्षमा कर दूसरों को भी बीती बातों को याद न करने की शिक्षा देती थीं। अपने हृदय को स्वच्छ, निर्मल, शक्तिशाली बनाकर फिर से पुरूषार्थ में लग जाने की प्रेरणा देती थी। दादीजी का स्लोगन था, क्षमा करो और भूल जाओ। सभी को सम्मान देकर वे स्वयं सम्माननीय बन गईं। उनका व्यक्तित्व दिव्यता व अलौकिकता से सम्पन्न था।

दादी के वो बोल यादगार बन गये

ब्र.कु.कैलाश

दादीजी इतनी बड़ी हस्ती होते हुए भी हम सभी बहनों के साथ बहुत प्यार से, निर्माणता से रही और हमें रखा। एक बार दादी जब सुबह बाबा की याद में बैठी थीं तो उनको संकल्प आया कि कैलाश बहन को अहमदाबाद में भोग लगाने के लिए भेजूं। दादी ने कहा कि आपको आज सुबह ही अहमदाबाद जाना है, वहाँ दिवाली का भोग है आप भोग लगा के आओ। फिर दादी ने कहा कि कैलाश बहन अब आपको ड्रेस नहीं पहनना है, जो ड्रेस है लच्छू बहन को दे दो और उनसे साड़ी ले लो अब आपको साड़ी ही पहनना है। फिर लच्छू बहन ने मुझे बहुत अच्छे से साड़ी तैयार करके दी। उसके बाद मैं अहमदाबाद में गयी। दादी ने कहा बाबा के भी आपके लिए बहुत ऊंचे संकल्प थे और वही संकल्प दादी के अंदर भी है, बाबा ने आपको बहुत अच्छे स्थान पर भेजा है, अभी आपकी बहुत बड़ी बेहद की सेवा शुरु होनी है। आप बस निमित्त बन करके हाँजी करते हुए जो सेवा मिले वो करते चलो बाबा आपको दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ाता रहेगा और फिर हम अहमदाबाद ही रह गये। दादी जी के बोल मुझे साधारण नहीं लगे लेकिन लगा जैसे दादी वरदान दे रही है और जैसा दादी ने बोला था सरला दीदी ने थोड़े ही दिनों के बाद नया सेंटर मणिनगर में खोला वहाँ भेजा, वहाँ भी हमने 8-9 साल सेवा की। उसके बाद दीदी को संकल्प आया कि हम गांधीनगर सेंटर खोलें तो उन्होंने दादी से पूछा तो दादी ने कहा कि भले खोलो और वहाँ कैलाश को रखो। फिर दादी ने मुझे वरदान दिया कि आपका हाँजी का पार्ट आपको बहुत आगे ले जाएगा आपको तो कोई मेहनत नहीं करनी है बाबा अपने आप आपसे सेवाएं करवाएगा। दादीजी निर्माणता की मूरत थीं।

सभी को नूरानी नज़रों से देखा

ब्र.कु.बृजमोहन

मैंने स्वयं को सदैव दादीजी के समीप महसूस किया और मेरा सोचना है कि सभी ने ऐसा ही महसूस किया होगा। दादीजी दैवी परिवार के एक-एक सदस्य को बहुत ही महत्वपूर्ण और खास समझती थीं। दादी की नज़रों में सभी एक समान महत्व रखते थे इसलिए उन्होंने कभी किसी को अलग से कोई खास टोली या गिफ्ट नहीं दिया। उन्होंने कभी किसी के अवगुण नहीं देखे, बल्कि सभी की विशेषताओं की सराहना करती रहीं। जब भी मधुबन में कोई ग्रुप आता था तो दादीजी सभी के रहने की व्यवस्था तथा उनकी संतुष्टता का पूरा ध्यान रखती थीं। उन्होंने दैवी परिवार की मुखिया होने का रोल बखूबी निभाया। दादीजी पूर्णतः निरहंकारी थीं। इतनी विशाल आध्यात्मिक संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में अपने अधिकारों का मानवीय सद्भावना के साथ इस्तेमाल करती थीं। वह हमेशा याद करातीं थीं कि यह कार्य बाबा का है और वो करा रहा है। उन्होने बाबा पर दृढ़ निश्चय एवं समर्पण होकर सभी परिस्थितियों को पार किया। दादी ने शांतिदूत के रूप में कई देशों की यात्राएं कीं और वहां के प्रशासकों से मिलकर उन्हें शान्ति संदेश दिया। दादी से मिलकर सभी को पवित्र प्रेम की भासना आती थी। वो सचमुच एक महान आध्यात्मिक नेता थीं।

दादी को रूहानी डाक्टर के रूप में देखा

ब्र.कु.पुष्पा

ये मेरा परम सौभाग्य रहा कि हमारी प्यारी दादी जी के अंग-संग रहने का मुझे बहुत सुंदर मौका मिला। हम देखते थे कि आपमें हमेशा ही दूसरों को आगे बढ़ाने की भावना रहती थी। हमने देखा दादी हमेशा सभी के गुण ग्रहण करती थीं। भले कोई दादी के साथ ना भी रहे हो। हमने एक बार अनुभव किया कि हम एक बारी 60 टीचर्स थीं, मधुबन में जो हिस्ट्री हॉल है, वहाँ पर हमलोग बैठे थे। दादी और दीदी के साथ हमारा भोजन था, जैसे ही हमारा भोजन पूरा हुआ तो मनोहर दादी ने दादी से पूछा कि क्या आप सभी टीचर्स की आप विशेषता जानती हो? तो बोला हाँ। तो पूछा कि क्या आप बताएंगी तो दादी ने कहा, हाँ। तो एक सेकण्ड में जैसे हम लाइन से बैठे थे, दादी ने एक-एक की विशेषता बतानी शुरु कर दी। यदि किसी की कमी दादी को ध्यान में आती थी दादी बडे प्यार से बुलानी बिठातीं थीं और पहले उसकी विशेषताओं को दादी उसे बताती थीं, कि तुम्हारे पास ये ये विशेषता है। उसके बाद दादी धीरे से उसे कहती थी कि देखो आपने एक छोटी सी गलती है, अगर तुम ये निकाल दो तो तुम सोने की बन जाओगी। जैसे डॉक्टर किसी पेशेन्ट का ऑपरेशन करता है तो सबसे पहले वो उसे एनेसथेसिया देता है, ग्लूकोज चढ़ाता है, शक्ति भरता है उसके बाद ऑपरेशन करता है तो दादी भी किसी की कमी-कमजोरी निकालने के लिए पहले उस आत्मा को प्यार से सुनने के लिए मन तैयार करती थी और अगला व्यक्ति उसे स्वीकार करता था और उसे निकालने के प्रयास में लग जाता था। दादी मेरे साथ बिल्कुल सखी के समान रहती थीं।

वे झुकना जानती थीं

ब्र.कु.सुषमा

एक बार योग भट्ठी में मैं कॉमेन्ट्री से योग करा रही थी और दादी भी सामने बैठी थीं और पता नहीं दादी ने शब्दों को किस तरह से लिया और एकदम योग में डूब गईं। दादी जब बाबा को याद करने बैठती थीं तो उन्हें स्वयं को देह से या अन्य बातों न्यारा करना नहीं पड़ता था, नेचुरल सदा न्यारी ही रहती थी। कर्म करते भी वे डिटैच रहती थी। दादी हमेशा कहती थी कि बाबा बैठा है, खड़ा है, करनकरावनहार है, तो बाबा बाबा करके उन्होने कभी समझा ही नहीं कि मैं कर रही हूँ। दादी ज्ञान और योग के लिए स्पेशल टाइम देती थीं। दिन में कई बार मुरली पढ़ना अमृतवेला करना। दादी कारोबार करते भी अपनी पढ़ाई और तपस्या पर पूरा ध्यान देती थीं। दादी स्नेही मूरत थे अतः उन्हें सभी का दिल से सहयोग प्राप्त हुआ। जैसे अंग्रेजी का शब्द है हार्मनी (सद्भावना) तो दादी कहती थीं कि हार मानी और बात सुलट गई। दादी झुकना जानती थी, उनमें लचीलापन बहुत था। उनके स्नेही स्वरूप और लचीलेपन के कारण कभी किसी कार्य में गतिरोध पैदा नहीं हुआ। दादी के सामने ईगो प्रॉब्लम तो थी ही नहीं। उनको हर घड़ी ये लगता था कि बाबा का कार्य है और बाबा का कार्य होना चाहिए। दादी न्यूज़ पेपर वालों को भी कहती थीं कि दादी के नाम पर तो एक रुपया भी नहीं है, बैंक एकाउंट ही नहीं है, तो दादी ने अपना कुछ नहीं रखा और सबकुछ बाबा के लिए किया। दादी के लिए सर्वस्व बाबा ही था।